

ACMA ARCHIVES

2369

THE AMERICAN MUSEUM OF NATURAL HISTORY

शुभा॥

॥१॥

~~श्रीगणेशाय नमः~~ ~~श्रीलक्ष्मीनमः~~ ~~श्रीवैष्णवे नमः~~ प्रनीम्य
इति रसावा इति जला कथा ख प्रती प्रभु॥ लोना नाशा रसा इति वदय राज
नीती स मुच्य पद॥ १ ॥ त्रैलोक्यका अधिपती श्री नारायण लक्ष्मी नमः
स्कारगारिना नाशा स्वमा जिव्या कोरा जनीती मकर हं ॥ १ ॥ अंधी
त्येव भीदं साहं नरो ज्ञास्यति तत्त्वतः॥ धर्मो पदे सवी नयं कार्या
कार्य शुभा शुभम्॥ २ ॥ यो सास्त्र पन्या पदि धर्म अ धर्म कार्या
अकार्य शुभ अ शुभ ज्ञान अ ज्ञान जान्या होला॥ २ ॥ तदहं संप्रव
क्ष्यामी नराणां ही त काम्यमा॥ येन प्रज्ञा प्रवर्द्धते मातैव ही त कारि

॥१॥

॥२॥

नि ॥ ३ ॥ मनुष्य काही तगाल कामनाले मकहंहु ॥ ननु थलारे पोस
वले आमा लेही तगे न्याह ॥ ३ ॥ गुलसुत्रं प्रवक्ष्यामी चान् केननु भा
षितं ॥ यन्वी जानम वैरा सर्वज्ञत्व हि जायते ॥ ४ ॥ गुलसुत्रका कुराम
कहंहु आधी चानक मयिले उग झाहे राता इ कह्य के पोसाख पक्षा
पदि सर्वज्ञानी होता ॥ ४ ॥ मूर्खसि थो पदे ननु दुष्टासी भरणो नच ॥ ५ ॥
पक्षां प्रयागेन प रिदने पक्षी र्दते ॥ ५ ॥ मूर्खसि थो लह उप देलसि
या पदि कुचरि वलीला इगह नारि यापदि ॥ अधिवीग्रह ग-याका
समुसीन संगत-यापदि प रिद त भयापनी लास हुंहु ॥ ६ ॥ गुरिग

॥ १ ॥ भीसहसंपर्कपंडितैः सहसंकथा ॥ कुलीजीसहसित्रत्वं कुवीरोगना
वसिदति ॥ ६ ॥ गुणिकहसंगसं

॥ २ ॥ भुजंगानीमयपानाचदंतीनां ॥ स्त्रीनांराजकलानांचवीश्वासंतिगण
पुष्प ॥ ७ ॥ बहुलायाकामाजीसः सर्पमद्वारहातिः स्वारित्रः राजाकामा

निसः रतीसीतवीश्वासगन्याजीउजान्याह ॥ ८ ॥ वीरेणांसतवीश्वा
संयोनरकतुमिहती ॥ सहस्रांगेषुसंसुप्तपतीतपतीव्यते ॥ ९ ॥ सनु
सितजोमनुष्यलेवीश्वासगतीत्योमनुष्यरूपकापुपामासुन्याकोष ॥ राम

ह्यापदि जागर्त हं हत है ॥ ८ ॥ अन्यान्य प्रयोगेषु बीद्यासंग्रहस्य
य ॥ आहारव्यवहारेषु न्यक्त लज्जा सदा भवेत् ॥ ९ ॥ अन्यान्य संग्रहस्य
नु ॥ बीद्यापहस्यानु व्यवहारगर्नु एतीथोक्त माताजनमान ॥ १० ॥ नगुरु
सद्र सिं माता नगुरु सद्रही पीता यस्तारे यन्नि संघोर संसार चीदुष्टम
॥ १० ॥ पुन पुरुष का आमा बाबु भंदा गुरुले संसार समुद्र पात गरि दीन्य
ह ॥ १० ॥ माता गंगा सर्म तीर्थ पीता पुष्कर मे वचन ॥ गुरु के दारिद्र्य च
माता गंगा पुन ॥ ११ ॥ आमा गंगा बाबु पुष्कर तिर्थ गुरु के दानी थ
हो वार वाए आमा ला दूगंगा हो न नी जानु ॥ ११ ॥ बीद्या रूपाना क्षमा

बुद्धी॥

॥ ३ ॥

रूपतपस्विनां को कीलानां स्वरूपं नारिरूपं पत्नीवता ॥ १२ ॥ पुरुषको
रूपवीद्यातपस्विकोरूपक्षमाको कीलको रूपस्वर स्त्रीको रूपपत्नीव
ता धर्म ॥ १२ ॥ नचवीद्यासमो वंधुन च व्याधि समोरिपु ॥ नचापत्यस
मास्त्रे हो नच देवात्वरंवरं ॥ १३ ॥ स जन भयापनी वीद्या तुल्य है न स बुद्ध
यापनी व्याधि तुल्य है न प्रीती जयापनी हिरा तुल्य है न बल भयापनी
देव तुल्य है न ॥ १३ ॥ वीद्या प्रवासी नो मित्रं भार्या मीत्रं गृहेषु च ॥ आ
तुरे स्पांष धर्म मित्रं धर्म मीत्रं परत्र च ॥ १४ ॥ परदेस को मित्र वीद्या घर
को मित्र खिरोगी को मीत्र औषधि परत्र को मीत्र धर्म ॥ १४ ॥ हरि चि ता

॥ ३ ॥

राम ॥

वीषं वीद्या अर्जि र्गो भोजनं वीषम् ॥ विषगो लि रुरिद्रस्य ब्रह्मस्य त
रुरिगविषम् ॥ १५ ॥ अ न्यास नग-या वीद्या वीष हुं ह ॥ अर्जि र्ग न नया
अन्न वीष हुं ह ॥ रुरिद्र नया गोष्टि वीष हुं ह ॥ वृद्ध लाई त रुरिगि स्त्री वीष हुं
ह ॥ १६ ॥ अना न्यासै हं ता वीद्या नित्य हा सै हं ता खिय ॥ कुवी र्जन ह तं शे
व न्न न्य रोषै हं तो नृप ॥ १६ ॥ अ न्यास द्वा द्वा वीद्या ना सिं ह ॥ स चै हा सि
वो ल्या स्वस्ति ना सिं ह ॥ न नी को वी ज रो प्या से त ना सिं ह ॥ चाक र घ ति
या ए ष्या ए जा ना सिं स ॥ १६ ॥ यस्य पुत्रे न वी द्वां सो न शूरे न च प रि द त ॥ अं
ध कार कुले तस्य न ष्ट च द्रे प सर्व रि ॥ १७ ॥ ज हं का हो रा अज्ञानी का तर

॥ ४ ॥

मूर्खतस्कोकुल। रात्रिमाचन्द्रमानजयार्जे अध्यारोहं ह॥ १७ ॥ सर्वरि
दीपकश्चन्द्रप्रभातेरवीदीपक॥ त्रैलोक्यदीपको धर्मसुपुत्रकुलदि
पक॥ रातकावतीचन्द्रमाहो दिनकावतीश्रीसु र्य। तीनैलोककोवति
धर्मकुलदिपसुपुत्रहो॥ १८ ॥ जनेताचोपनेतान्च यस्तु विद्यां प्रप ह
ति॥ अंनदाताभयवातापंचैतेपितरस्मृता॥ १९ ॥ जन्मदिन्याप्रतीपा
तगर्न्यावीद्यापहाउन्याखानदीन्याभयमारक्षागर्न्याशतीपाचजना
लार्द्रवापुजंनु॥ २० ॥ गुरुपत्निराजपत्निमीवपत्निनतथैवच॥ पत्निमा
तास्वमाताचपंचैतेमातरस्मृता॥ २१ ॥ गुरुकास्त्रीराजाकास्त्रीमीतआ

॥ ४ ॥

[illegible]

नं॥ २३॥ विद्यापदं नुमनदं अभ्यासपनीगार्ह्यतवुदिनभयापनिजान्या
हंद॥ रुचिपनीदैन॥ अभ्यासपनिदैनतवुदिलेक्याप्रयोजनदो॥ २४॥
पुत्रास्तुविविधैसासैनीयोयासततेवुधै॥ नीतिज्ञावुदिसंपत्राभवंतिख
लपुजिता॥ २४॥ दोराकनअनेकसास्त्रमासदेअभ्यासगर्नलाउनु॥ सा
सलेवुदिवंतभयापदि सवैलेमान्यपुजागर्ला॥ तसर्थदोराकनवीद्याप
द्राउनुपद॥ २४॥ पठपुत्रकिमालस्यमफठेभारभाहक॥ पठत॥ पुजी
तोराजापठपुत्रदिनेदिने॥ २५॥ चानकमृषिलेआफरादोराईसिका
उंद॥ हेपुत्रसास्त्रपदअलसिद्धादसास्त्रनपहापदीभारिबोकनुपला

साहचर्येण जले पत्नी पूजामान्य गत्वा तस्य अर्धं दिनं दिने सा स्वपद्मः ।
अन्यासगर्भं पद्मं भनी आभ्रा देवता तावु सिकाया ॥ २५ ॥ गुरोषु क्रिय
तां यत्नं किं मतो न्यन्य योजनं ॥ वीक्ष्यंते न घटाभिगावः क्षीरवीव
र्जिता ॥ २६ ॥ गुरालिनुकामगर्भं निमित्तं यत्नं गर्भं शोभागरिव स्यात्
केहि प्रयोजनं न कसो न न्यादुद न दि न्या गाईला इ गह नाराणीय
चदा मोल जाई न ॥ २७ ॥ नर स्या भरणं रूपं रूप स्या भरणं गुरां ॥ गुरास्य
भरणं ज्ञानं ज्ञान स्या भरणं क्षमा ॥ २८ ॥ मनुष्य को गहना गुराः गुरा
को गहना ज्ञान ज्ञान को गहना क्षमा ॥ २९ ॥ गुरां पृष्ठं सिमा रूपं शितं पृ

द्वसिमाकुलं॥सिद्धिपृद्वसिमाविद्याभोगंपृद्वसिमाधनं॥२८॥गुणाशोधन
रूपनसोधनसिलशोधनकुलनशोधनसिद्धिशोधनवीद्यानसो
धनभोगगर्हकिभनेशोधनधननशोधन॥२९॥अगुणस्यहंतंर
॥६॥पंअशीलस्यहंतंकुलं॥असिद्धेश्वहताविद्याअभोगस्यहंतंधनम्॥
३०॥गुणहन्यामांदेकोरूपव्यर्थ।सीलहन्यामांदेकोकुलकोनासहं॥६॥
द्वसिद्धिनभयाविद्याकोनासहंद्वभोगगर्हनसक्याधनकोनासहं
द्व॥३१॥गुणांभुषायतेरूपशीलंभुषायतेकुलं॥सिद्धिंभुषायतेविद्याभो
गंभुषायतेधनं॥३२॥रूपकोगहनागुणगुणकोगहनासिलस्वभाववि

द्याको गहना सिद्धि अनको गहना भोग गर्नु ॥ ३० ॥ सुकुं योज योक्त्या
पुत्रं विद्या सुयो जयेत् ॥ यसने योजयेद्देवं श्रीं धर्मं नी योजयेत् ॥ ३१ ॥
नी का कलम क न्यादिनु द्वा एक न विद्या पहा उनु व्यसन मा सत्रु कन
कामला उनु धर्म का काम मा मित्रता उनु ॥ ३१ ॥ नान्युच्च सिखरे मे रुर्न
तिनि मूरसा तलं ॥ व्यवसाय सहायानां नान्ती पारमहोदधी ॥ ३२ ॥ सुमे
रु पर्वत पनि अति उच्च देन पाताल पनि अति तल देन सागर समुद्र पनि
पारगनु हुंद् ॥ एति जानि कन ज्ञानि लोक ते उद्यम गर्नु पर्द ॥ ३२ ॥ श्लोकेन
चतुर् देन पाटेने काक्षरेन वा ॥ अव न्या दिव संकुर्यादा ना व्यपन कन

यापनिचरणमात्रैलेकपनिहुंद। नसक्याएकाक्षरमात्रैलेपनीहुंद। तस
निमित्तअभ्यासदिनेगानुदानगानुपठनुमाअभ्यासगानुपर्द॥३॥
३॥ योजनानांसहस्रणिवज्रयाणिपिपिलिका॥ अगाधनूवैनतयेपिप
॥७॥ दमेकंनगाहती॥३४॥ अभ्यासगारिकनगायापदिहजारहातजोजन
किमित्तोजांदू। नगायापदिगारुदलेपनि एकपाउअधिरपिकनचलनस॥७॥
कैन॥३४॥ सनैरथासनैविद्यासनैपर्वततंदने॥ सनैधर्मश्चकामश्च
व्यायामश्चसनैसनै॥३५॥ धनतुत्याउनुविद्यापहनुपर्वतचउनुकाम
गनुएतीथोकहतपततेहुंदेनविस्तारगारिगानुपर्द॥३५॥ गुरुसुश्रुष

याविद्या पुष्करेण ध्वनेन वा ॥ अथवाविद्या यां विद्या चतुर्थो नोपलब्ध
ते ॥ ३६ ॥ चार प्रकारे विद्या लिनुहन्छ ॥ गुरुको चाकरि गरिकन पनि
विद्या परनु पुस्तक दिक्कन पनि ॥ धन दिक्कन पनि विद्या दिक्कन पर
नुपर्छ ॥ ३७ ॥ एकाक्षर प्रदाता रंयोगु रं नाभि मन्त्र ते ॥ स्थानयो निंस
तंग त्वाचां दालेषु पि जायते ॥ ३८ ॥ एक अक्षरमात्र सिका उन्या गुरु भया
पनी सां नुपर्छ नमान्या पदि कुकुरको पोनि मास पवार जन्म मैकन फे
रिचां दाल जन्म ॥ नोग गर्नु पर्छ ॥ ३९ ॥ पुस्तक प्रत्ययो दितं नास्ती तं
गुरुसंक्षिप्तं ॥ नसो नते स ॥ भामध्ये जालगर्भ इव स्त्रिय ॥ ४० ॥ पुस्त

॥ बुची ॥

कमाहेरि कनमवि पक्रि कनु ॥ गुरु देउ न पन्या पदिस भा मा सो भा हुं देन
जाल देषी निस्का को हो ए मे हुं द ॥ ३८ ॥ काठ को व्य पारि दुंगा को व्य पारि
षर्बत मा चरु नु आल स्य न गनु पंदित हुनु ॥ मित्र संग्रह गनु एति चोर ले
॥ ८ ॥ चोरि कन ले जादि न एती पाच थोक अक्षय भंड रहनु ॥ ३९ ॥ नही जन्म
निज्येष्ट त्वं ज्येष्ट त्वं गुरा मुच्यते ॥ गुरा गुरा तरं यांति पयो दधि घृतं थ
था ॥ ४० ॥ जन्म ले जठो हुं देन जेठो भन्या को गुण हो ॥ कस्तो भन्या दुद द
हि भय द्यो उजे थो ॥ ४१ ॥ किंकुले न वीला लेन गुण वान् पूजितो नर ॥ ध
नुर्व सविश्रु हो पिनी गुण किं करिष्यती ॥ ४२ ॥ गुण रत्न भया पदितु

॥ ८ ॥

॥ राम ॥

लोकुलमाजन्मति नुपदैर्नः लोकलेगुएलाईमानपतानुपदैगएननया
पदिधनुर्वसराजकोदेराभयापनिक्यागनुहुंद् ॥ ४१ ॥ किंकुलेनविस्माले
नविद्याहीनंतुयेनार ॥ अ ॥ कुलीनोपि विद्वांसोपुज्यते देवताइव ॥ ४२ ॥
विद्यानभयापही तुलोकतमाजन्मभयापनीक्याप्रयाजननिचाकुल
माजन्मभयापनी परितज्ञानिभयापही देवतामैलोकलेपुजाग
ली ॥ ४२ ॥ नावार्थि यन्नवेदिद्यायावन्यारंनगदति ॥ उत्तीरेचगतेषा
रेनोकायाकिंप्रयेजनं ॥ ४३ ॥ वोद्यारनाउ यदैहहैर् ॥ पारनहंज्याहा
जमचाहिंदससद्रप ॥ गगनापादिनाउकोक्याप्रयेजन ॥ ४३ ॥ गुरा

॥ पुं धी ॥ सर्वत्र पूज्यं ते पितृवंशे अनिरर्थकं ॥ वासुदेवं नमस्यंति वसुदेवं न ते जना ॥ ४४ ॥
सर्वे ते गुणकोपजा गर्ह्ये एवावाक्रमे दैनगुरा भयापदि श्रीकृष्णता सर्वे ते पूजा
गर्ह्ये वसुदेवता इको हि पूजा गर्ह्ये न ॥ ४४ ॥ गुणा कुर्वन्ति हृत्त्वं हरे पिवसतां सतां
॥ केतकि गंधमाघाय स्वयं गर्ह्ये नीष पु पदा ॥ ४५ ॥ गुणा वन्तमानि सताठा भया
पनि सज्जन हरमानि सजां दन ॥ केतकि का वासना ले दाठा भयापनि भ्रमरा ॥ ४५ ॥
उसैठा उमा पुग्दु तसै ॥ ४५ ॥ विद्या सर्वत्र पूज्यते ॥ ४६ ॥ एजा रवि द्या दु वै तुल्य
हुं दैन आफ्रा दे शी ले एजा को पूजा गर्ह्ये सर्वे लोक विद्या को पूजा गर्ह्ये ॥ ४६ ॥ एके
नापी सुपुत्रे ए विद्या युक्ते न साधुना ॥ कुतं फुरु ष सिंहे न चंद्रे नैव प्रकाश्यते ॥ ४६ ॥

॥ ४५ ॥

॥ ४५ ॥

॥ राम ॥

॥ ४३ ॥ एकद्वारा भयापनि हुं हस्तपुत्र विद्यावंत साद्युपुरुष तेसा होएते कु
लको प्रकास गद् ॥ ४३ ॥ विद्यायां भाजनं कश्चिद्द्वयस्या भाजनं ॥ ३ ॥ नयो
भाजनं कश्चिद्द्वयस्या भाजनं ॥ ४४ ॥ कसैदेउ विद्या हुं ह कसैदेउ
चन हुं ह कसैदेउ विद्यापनी चन पनि हुं ह कसैदेउ दुवै थोक हुं देन ॥ ४५ ॥
नमंती फल नोत्त क्षान नमंति गुरिणो जना ॥ शुक्लकाष्ठं चमू खं च भिद्यते
नैव नम्यते ॥ ४६ ॥ फल हुं न्या रुष रगुरिण कजन नन स्रता गरि वस्द सुका
को काठ रमुख जन नम्र हुं दे न वरु निज न हुं ह ॥ ४७ ॥ नहि कर्मणि चत
रि संख्या काले प्रयोजयत् ॥ आहारमै धनं निद्रा तथा स्वाध्यायमेव

राम॥

॥१०॥

च॥५०॥ चारथोक कामसंध्याकातमानगर्नु। खानुमैथुननिद्रापठनु
एतिकामनगर्नु॥५०॥ आहारज्जयतेव्याधिगन्तुकिरश्चतायते॥ अल
क्ष्मीकश्चसख्यायांसपाठादयुषक्षथ॥५१॥ संध्याकातमारवायापहिरो
गीहुंद्मैथुनगन्यापदि कुरपुत्रजन्महुंद्सुन्यापतदिस्मक्षयहुंद्पाठगन्या
आयुक्षयहुंद्॥५१॥ वेदवेदांगतत्वज्ञजपहोमपरायण॥ आग्नीर्वोदपरोनिते
एषराज्ञपुरोहित॥५२॥ वेदवेदांगतत्वज्ञान्याजपहोमजान्या आगिर्वोद
दिन्याएस्ताव्रात्मनकनपुरोहितगर्नु॥५२॥ प्राज्ञस्त्रिग्वोमहीपालक्षुद्रकर्म
वीवर्जित॥ विद्वरेचपरित्यागीसमउ। खंस्तमुषुखं॥५३॥ शानीकोमुलस

॥१०॥

राम॥

मुक्ता मगन्या आपति मात्या गि सुख दुःख समगन्या एस्ता कन राजागर्नु ॥ ५३ ॥
कुल सिलगुणोपेत सत्यवादी धर्महु न्या निति जान्या सवै थोक मासम
थहु न्या एस्ता राजागर्नु ॥ ५४ ॥ करुव्य सनि नलु धम प्रगं लभ परा र्जव ॥ अ
नाय व्यय कर्ता रै न्ना चि पत्ते नी योजयत् ॥ ५५ ॥ करुव्य सनि लो मि अ
हंकारि आयन हेरि कन व्य यग न्या एस्ता कन राजा नगर्नु ॥ ५५ ॥ मूल वृत्ति
हितो चीर सर्व रत्न परि क्षय ॥ भुचि श्रव्य वसायी धर्मा द्य क्षो बी रि यते
॥ ५६ ॥ सवै कन धैर्य वत सवै रत्न को परि सा जान्या सुचि दाता एस्ता कन
सभापती गर्नु ॥ ५६ ॥ आगुर्वेद कृता भास ॥ सर्व ज्ञ प्रिय रत्न ॥ आर्य सि

॥ सुचि ॥

॥ १११ ॥

लगुणोपेत एषैव द्योविधियन्ते ॥ ५७ ॥ कालज्ञान आदि अन्यासगन्यावै
द्यसास्त्रसर्वैजान्यानादिभेदज्ञान्यानादिभेदज्ञान्या औषधजांन्या लोक
मालन्यासितस्वभावानिको हुन्या एस्ताकन वैद्यगर्नु ॥ ५७ ॥ पितृपिताम
होदक्षशास्त्रज्ञो मिष्टपाचक ॥ सुचि श्रवकठिन श्रवैव सुपकारप्रसस्यते ॥ ५८ ॥
ते ॥ वयजुनीवावादेषि विचक्षसासास्त्रजांन्यापाकगर्नुजान्यादाता ए ॥ १११ ॥
स्ताकनभांस्यागर्नु ॥ ५६ ॥ सकृदुक्तगृहितार्थो लह स्तो जिताक्षरः सर्व
सास्त्रसमातोकि एषलेखक उच्यते ॥ ५६ ॥ एकवारपद्माको अर्थजांन्या
सुस्तगारितेषन्यानिका अक्षरनानासास्त्रको अन्यासगन्या एस्ताकन

॥ राम ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ २ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ३ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ४ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ५ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ६ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ७ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ८ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ९ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १० ॥

॥ बुधी ॥

॥ ६२ ॥ मेधाविवाक्यदुप्राज्ञः परचित्तोपलक्षकः ॥ धिरेयथोक्तवादिचरस्य दूतो विधि
यते ॥ ६३ ॥ मधुरगारिवोलन्याकुराजान्याज्ञानि अर्काकोमनबुद्धादृकाणकुराण
नसकन्याधैर्यं वंत युक्तवादि एताकन दूतपठाउनु ॥ ६३ ॥ पार्थिवस्य चमृत्य
स्यवदामिगुरातक्षणा ॥ एनसंव दूतेराजा भोंदांगारस्तथैवच ॥ ६४ ॥ राजाको
रदासकोलक्षराजश्चे राजावर्द्धमानगज्येत्यो भंदारिनृत्याउनु ॥ ६४ ॥ अतए ॥ ११ ॥
वकुलीनानांदयाकुर्वन्ति साधवः ॥ आदिमज्याचसानेषुनतेयास्य तीविक्रियां ॥
६५ ॥ कुलव्रतदयावतसीतसंग्रहगज्यापनि तेस्कोकामकैलेपनीनासहृंदे
न ॥ ६५ ॥ पदितेषुगुणा सर्वे सुखे दोषास्तुकेवलं ॥ तस्मान्मुखसहस्त्रानी प्रा ॥ ११ ॥

॥ ११ ॥

॥ राम ॥

शतकपसस्यते ॥ ६६ ॥ पंडिते तदेतद्गुणमात्रे हं हं मुखधै दोषमात्रे हं हं हं
जानिकनहजारमुख्यद्विकनएकजानिजनयोजनु पद ॥ ६६ ॥ प्राज्ञेनियोज्य
मानेतुसंतिराज्ञस्वयोरगुणा ॥ यसस्वर्गनिवासश्चपुष्करश्चधनेपिच ॥ ६७ ॥ ज्ञा
निज्ञनराष्ट्राकाकाममारजाला इति न गुणहं हं यस्यकिती ऐश्वर्यधनप्राप्ति
स्वर्गवासहं हं ॥ ६७ ॥ मुखेनियोज्यमानेतुत्रयोदोषोमाहि पते ॥ अयसश्चाथ
नासश्चनरकेयतनंध्रुवम् ॥ ६८ ॥ मुखराष्ट्राकाकाममारजाला इति
न दोषहं हं ॥ अयसः धन ॥ नास नरकवासहं हं ॥ ६८ ॥ तस्माद्दुर्मीनरेणनि
धर्मकामार्थसिद्धये ॥ गुणवन्तनियोज्यंतेगुणाहीनंवीवर्जयेत् ॥ ६९ ॥

॥ बुद्धी ॥

॥ १३ ॥

॥ राजालेधर्म अर्थ कामवठा उना कन गुणवंत काम मारा पनु गुण न भया
का लाई दानु ॥ ६८ ॥ यत्किं तो त्कुरुते भृत्य शुभवायी दवा शुभ ॥ तन संवदते
रजा सुकृते दुःकृते रपि ॥ ७० ॥ गुणवंत कन काम लाया पदि शुभ गन्या पानि र
जा के लक्ष्मी त्रिदि हुंद ॥ ७० ॥ यथा हेम परि द्यं ताप ता दन दे दने ॥ तथा पुरुष म
येवं कुलशीलेन कर्मणी ॥ ७१ ॥ सुन को परि क्षागर्नु पो लि हानि कारि था हा ॥ १३ ॥
दुदत सै कुलशील स्वभाव हरि कन पुरुष को परि क्षागर्नु ॥ ७१ ॥ जान व्यं प्रवरो
भृत्या वधवा व्यसना गमे ॥ आप काले तथा मित्रं भार्या च वि भव क्षये ॥ ७२ ॥
सेवक हित को द्दैन परि क्षागर्नु काम पठा ई कन हेनु ॥ ७३ ॥ खमा आ ई को आ ॥ राम ॥

आमित्रधनसकिंदास्वात्मिकोविचारहेन ॥ ७२ ॥ भृत्यावहुविचारजननुतमा
धमसम्यग्मातेनि पोज्यायथायोग्यंविबिधेष्टेवकर्मसु ॥ ७३ ॥ हेनहारजाति
वकचेरप्रकारकादुभयममध्यमअधममानिहेरि कनयो ग्य २ काममा
ताउनु ॥ ७४ ॥ आतस्यंमुषरंकरं संधं व्यसनिनंसठं ॥ असंतुष्टमभक्तं
चत्पतेइत्यनराधीप ॥ ७५ ॥ अस्मि वाचालकोधितपस्विनसनि सठं अ
सं तोषि अवाक्ति एसाकनचाकरनएखनु ॥ ७६ ॥ त्यज्येस्वामिनमनुगं अ
त्युगं कृप रोन्ध ॥ ७७ ॥ कृपणाद्विशेषेजतस्माच्च कृतनासन ॥ ७८ ॥ अ
तिउग्रस्वामीदादनु ॥ कृपणानयापनिदादनुकार्य अकार्य ॥ नजान्याराज

॥ पुं० ॥

॥ १६ ॥

दादुःख एता एजा संग्रहगन्या संगवस्थानास हुं ह ॥ ७५ ॥ वामा नार्था सुतो
मुखप्रेषको वाग्विचारक ॥ सिखे हो वंधुवर्ग अन्यजेदस्य सहस्रमुख ॥ ७६ ॥ विप
ती मानभया किस्ती ॥ मुखे द्येरा कामपठायको नगन्या कर्मो ॥ स्नेह नभया
की मित्रदुष्ट एती ठो क न द द्या ठो ॥ मुख हुं ह ॥ ७६ ॥ न कश्चि त्कस्य चि निमत्र
न कश्चि त्कस्य चि मित्र ॥ कारण देव जायं ते मित्राणि रिपवस्तथा ॥ ७७ ॥ कसैको ॥ १६ ॥
मित्रपनि दैन ॥ कसैको प्रियपनी दैन ॥ कार्यकारणमास रुपनी हुं ह मित्रप
नि हुं ह ॥ ७७ ॥ कार्याथी भजते लोको न लोको यरमार्थत ॥ वत्स क्षीरक्षय
दृष्टा परित्यजती मातनं ॥ ७८ ॥ कार्यको अनुसारले लोक भजना गद्द परमा ॥ राम ॥

थीलेलो कले भजना गऐ न क सो भन्या आमा लि दुदन दिया बादले द्याद ॥ ७० ॥
८॥ कु तो ब्यस नि नी द्रा अमृ प्तस्य कु तो रति ॥ कु त सो र्यं दी र द्रस्य दुर्जनस्य कु त
क्षमा ॥ ७१ ॥ जु वा ज्या को नि द्रा हुं दैन दी र द्र को सुख हुं दैन दुर्जन को क्षमा हुं
दैन ॥ न र्करस्य कु तो मा तो दुर्जनस्य कु त क्षमा ॥ वे स्या स्त्री रां कु त से ह कु टे स
त्यं च का मि नां ॥ ७२ ॥ ची र हं मान दै उ दुर्जन दै उ क्षमा हुं दैन वे स्या दै उ से
ह हुं दैन का मि दै उ सत्य दैन ॥ ७३ ॥ दु र्व लस्य व स लो रा वा रा नां रो दि तं व ल म
॥ व लं मु र्व स्य मो न त्वं ची रा रा ग म नृ त व ल म ॥ ७४ ॥ दु र्व ल को व ल रा जा वा ल
र व को व ल रु नु ॥ मु र्व को व ल वो ल नु ॥ ची र को व ल रु द्रो वो ल नु ॥ ७५ ॥ अ न्ना

॥ सुधी ॥

थानांदरिद्रानां वाततद् तपश्चिनां ॥ अन्यायपरिचुतानां सर्वेषां पार्थिवा गति
॥ ८२ ॥ अनाथकोदरिद्रकोतपश्चिको अन्यायगन्धाठाउ एतिको गतिराजाहु
दन् ॥ ८२ ॥ व्याधितस्या र्थहीनस्य शत्रुनिश्चितस्य च ॥ हृदये शोकदग्धस्य सु
॥ १५ ॥ हृदस्य नमोषध ॥ ८३ ॥ रोगिकोदरिद्रको सत्रुकोदरलाग्न्याको हृदयमाश्र
कते दग्धहृन्त्याको एतिथोकको शिवदर्शनगन्धा औषधीहृद ॥ ८३ ॥ आ
तुरवे सन्यप्राप्ते दुर्भिक्षे सत्रुविग्रहे ॥ राजद्वारे श्मशाने वा यस्ति पृथी स वा
ध्व ॥ ८४ ॥ रोगिभयामाव्यसनमा खानतपायामाशत्रुसितविग्रहभय
काठाउमाराजद्वारमा श्मशानमा एतिठाउ विचारगन्धाकिनभाई भंनु ॥ १५ ॥

॥ १५ ॥

॥ राम ॥

भंनु ॥ ८४ ॥ भावश्रुद्धिर्मनुष्याणां ज्ञातव्यं सर्वकर्मसु ॥ भावेन च विताकांटा
भावेन दुहितानया ॥ ८५ ॥ सर्वे काममानुष्यको भावसु द्धितो ह भावते स्वा
स्ति च वंशगार्ह ॥ भावलेहे रिपनि च वंशगार्ह तस्कारण भावविशेषविचार
भुं ॥ ८५ ॥ न देवो विद्यत्येकाष्ट पाषाणेन च मन्मये ॥ भावेषु विद्यते देवतस्मा
दूवो महत्तमं ॥ ८६ ॥ काठमापनि दुर्गामापान माता मापनि देव तान्न न्या
को भावमाह तस्कारण भावतुलो हो ॥ ८७ ॥ शीष्याणां देवता चार्यो ज्ञान
माचार्यदेवता ॥ देवता योषितां भर्ता ब्राह्मणो ज न देवता ॥ ८८ ॥ सिष्य
को देवता गुरुगुरुको देवता ज्ञान ॥ स्त्रीको देवता स्वाभि ॥ जनको देव

॥ बुधी ॥

॥ १६ ॥

तावात्मरा ॥ ८७ ॥ विप्रं पश्य यथावन्निमाचार्यं पश्य देवता ॥ पृथ्वी पश्य य
थामाता मित्रं पश्य यथा सुतं ॥ ८८ ॥ वात्मरा हेर्नु अग्नीर्दे आचार्य हेर्नु देव
तार्दे आमा हेर्नु पृथ्वीर्दे दारा हेर्नु मित्रर्दे ॥ ८९ ॥ गुरुरग्निर्दिजातिवरा नो
वात्मरा गुरु ॥ यतिरेको गुरुस्त्रीणां सर्वस्याभ्यागतो गुरु ॥ ९० ॥ वात्मरा
को गुरु अग्निचारवर्णवर्ण गुरु वात्मरा स्वास्त्रिको गुरु पुरुष सर्वैको गुरु अ
भ्यागत ॥ ९१ ॥ उत्तमस्यापि वर्णस्य नीचोऽपि गुरु मागत ॥ पुजनियो यथा
न्यायं सर्वस्याभ्यागतो गुरु ॥ ९२ ॥ उत्तमजातिभ्यापनिनीचजातिभ
यापनिघरमा आयापहि मान्यगर्नु पुजागर्नु सर्वैको गुरु अन्यागतो ॥ ९३ ॥ राम

॥ १६ ॥

॥ राम ॥

देवतापुजयेद्भक्त्या न पुजयेत् ॥ शूद्रपुज्योपकारेण विप्रारणाम
निवर्देनं ॥ ८१ ॥ देवतापुजागर्तुं भक्तिरित्येवावश्यकं पुजागर्तुं नमस्कारगरीकन
ब्राह्मणपुगानुरादीकन शूद्रपुजागर्तुं उपकारगरीकन ॥ ८२ ॥ धर्मस्य मुल
राजानतपो मुलं च ब्राह्मण ॥ ब्राह्मणाय नमः पुज्यते तत्र धर्मसनातन ॥ ८३ ॥ रा
जाको मुलधर्म ब्राह्मणको मुलतपजहा ब्राह्मण पुजागर्तुं तहा धर्महं
६ विष्णुलेपनिता हावा सगर्द ॥ ८४ ॥ आचारान्फलते धर्म आचारान्
लते धर्म आचारान्फलमेवातिस्माचारे हत्यत क्षरां ॥ ८५ ॥ वरिह्या आचा
रभयापदि धर्मधनसर्वेथो कपनी सफलहं ॥ आचारले अलक्ष्मीपनिना

सुवि
सङ्गुह ॥ ८३ ॥ भोज्यं भोजनं सक्तिश्चरति शक्तिर्वरस्त्रिय ॥ विज्ञोदानसक्ति
श्च नाल्पस्य तपसः । फलं ॥ ८४ ॥ पानं हुन्याते पानसमर्थं स्त्री हुन्याते संज्ञोग
समर्थः ॥ ८५ ॥ गन्याते एश्वर्यं समर्थं तु तपो तपस्याकाफलं लेमा वै ॥ ८६ ॥ वा
ले चैव चले धर्मं मानित्यं स्वतु जिवितं ॥ फलानामपि पक्वानां शास्वतं पतनं
ध्रुवं ॥ ८७ ॥ बालं स्वदे पि धर्मं गर्नु पदं संसारं अनित्यं कसो ज्ञान्या भुक्त्वा को
फलं स्वस्याग्रे शरीरं को नासङ्गं ॥ ८८ ॥ सदं भश्च हतो धर्मं को धेनेव हतं तप
॥ अट्टं च हतं ज्ञानं प्रसादेन हतं श्रुतं ॥ ८९ ॥ अदीप्यग्नौ हतो होमं हता स
क्तिरसाक्षिका ॥ उपजिग्याहता कन्या स्वार्थं पाकं क्रियाहता ॥ ९० ॥ अ ॥ राम

हंकारि जया पद्मि धर्मनाश हुंद ॥ कौचि जया तपको नमस हुंद दुरुन जया
ज्ञानको नास हुंद ॥ प्रमाद जया पद्मि तु न्याको नास हुंद ॥ ५६ ॥ व तीयो
न जयाको अग्नी माहो भगन्याको व्यर्थ साक्षि न जै खायाको अतं व्य
र्थ दामलि कन दीया कि कं न्या व्यर्थ आफरा अर्थ ले पाक ग न्याको अंन
व्यर्थ हुंद ॥ ५७ ॥ दरीद व्या विदु खानि वं च नं ब स नानी च ॥ अदा तु फल मे
तानि तस्मा दानं वी सिध्य ते ॥ ५८ ॥ पूर्व जन्म मा दान न ग न्या का फल
ले दारिद्र हुंद ॥ व्याधि हुंद ॥ स हुंद वं च नं ब स नि हुंद हति कारणा ले द
न धर्म गर्न ॥ ५९ ॥ फल कार स्व धान्येषु पुरी त्रिका स्व जंतुषु ॥ ना इ सा स

॥ १५ ॥

मनुष्येषु ये च धर्मवति । कृता ॥ ६६ ॥ जो कोहि धर्म सार सन भया का क
सो भया धान मागे दान भया का ज सो जंतु मा भया पुत ति ज सो मनुष्य
॥ ६६ ॥ त्यज्य दुर्जन सै सर्ग भज साधु समागम ॥ कुरु पुर पस हो रा व
॥ १६ ॥ स्मरन्वित्यं अ नित्य जा ॥ १०० ॥ संसार मा दुर्जन संसर्ग न गनु । साधु के सं
गर्ग राजदि न पुर प गनु ससार अति त्यद भनि जांनु ॥ १०० ॥ ~~इति श्री~~ ॥ १६ ॥
~~इति चानके सार संयते पथ मस्तके - १~~ सास्त्रार्थ चक्षुषा वी दो न रे न्द्र
नीति चक्षुषा ॥ १ ॥ वेदार्थ चक्षुषा वि प्रा द्तर वा र चक्षुषा ॥ १ ॥ पंडित
का आषा सास्त्र राजा का आषा नीति शास्त्र ए का आषा वेदार्थ अरु म ॥ राम

मनुष्यको आपाचार चिवागर्नु ॥ १ ॥ एति धर्मि शिष्यमज्ञ पापे पाप समा
समे ॥ राजानो दुर्निमीति स्याथ राजा तथा प्रजा ॥ २ ॥ राजा धर्मी नया
प्रजा पीन धर्मी हुं ह ॥ राजा पापि न पा प्रजा पीन पापि हुं ह ॥ राजाले वृदि
गन्वो प्रजाले पनि ॥ सो हि वृत्ति गार्द तस र्थ राजाले धर्म गर्नु पर्द ॥ ३ ॥ दु
ष्टम साह संघे र्थ वल बुद्धि पराक्रम ॥ षडे ते यस्य तौ वृत्ति तस्य देवो पिस
कीत ॥ ४ ॥ उद्भम साह संघे र्थ वल बुद्धि पराक्रम एति द्गुण संजुक्त मया
को पुरुष देविक न देवता ले पनि संका गर्दैन ॥ ५ ॥ साम्पदाने न मे देन क
मैरा च क्लेव च ॥ सर्व सत्तु सदा सत्तु घातनी यो न राधिप ॥ ६ ॥ साम्य

उची दानमन्त्रेकमवलसति गरिकन सवैव सुनासगारिकन राजालेश बुनास
गर्नुपर्दि ॥ ४ ॥ पात्रेन्यागी गुरो एगिभो गेपरिजनेसरु ॥ साखेवो धार
॥ १८ ॥ एयोधानृपते पंचलक्षन ॥ ५ ॥ सुपात्रमात्यागगर्नु गुरोमाइद्यगर्नुप
परियारमिलीषानुशास्त्रमाओठासर्नु संग्रामतयारगर्नु एति राजाको
पंचलक्षणाहो ॥ ५ ॥ उत्तमप्रानि पातेन श्रोनेदेनयोजयत्र ॥ लुधमर्ध प्र ॥ १८ ॥
दानेनस्तमत्युपराक्रमे ॥ ६ ॥ उत्तमपुरुषनमस्कारगरिकन कामगर्नु श्र
रोपुरुष भेदगर्नुलोभि जनसाईधनदिनुजेरिगाई तुल्यपराक्रमगर्नु ॥ ६ ॥
आत्मदिद्रं परेयाद्विद्यादिद्रं परत्यं च ॥ गुल्लकर्म इवांगानी परभांगानि प ॥ १८ ॥

रक्षावचलक्षत् ॥७॥ आप्रदोष अर्कोलाभनीदनु अर्कोको दोष जयापनिना
सगरिदीनुकसो जन्मा श्री शोरको लको गोपगारि कनक कर्मलेनु कि वस्तुतस्तै
अर्कोको दोष प्रकासनगनु ॥७॥ मनसा चिंतितं कार्यं वचनान् प्रकासये
त्तमंचलक्षनगुहात्मा कार्यं सिद्धिं अजायते ॥८॥ मनले चित्ताद्यको कार्य
वचनले प्रकासनगनु मंत्रगुप्ता जन्मा जे मनसु वगन्पाको गोपगनु त
वकार्यं सिद्धिं हुंद ॥८॥ उपकारग्रहीतेन सत्तु रणा सत्तु मुद्र रत् ॥ पादलज्ज
करभ्येन कंटकं ॥९॥ उपकारगन्पा पद्धि सत्तु ले सत्तु पनी उद्धा र्गदिकसो
गन्पा पार्श्वतलामाभिग्या कोकोठा । कहिले कि कछनु तस्तै सत्तु पनी

॥ दुधी ॥

काममातागृह ॥ ८ ॥ वदेस्मीव्रत्तं येन पावत्कालं विवर्जयेत् ॥ तथैव मा
गते काले जिघात्थर मिवा स्यति ॥ १० ॥ आप्ता विपतिमासनुवोकिप
नि जानुपर्दे सनुको काल आयापदिधरा भुमिमाष स्याज्जे नासगानु ॥

॥ ३ ॥

१० ॥ हेजिईकदुकस्त्रहोमधुरं किं न भाषसे ॥ मधुरं वद कल्याणि लोका
यं मधुरं प्रिय ॥ ११ ॥ हेजि श्रीमधुरकुरा क्यान न वो मधुरकुरा वीतमंग ॥ १२ ॥
लभयको मधुरकुरा स्वैलाई प्रिय महं ॥ ११ ॥ जिह्वाग्र वसते लक्ष्मी
जिह्वाग्र मित्रवांधवा जिह्वाग्र वधनं चापि जिह्वाग्र मरणं क्व वं ॥ १२ ॥ जि
ह्वाकादुष्यामालक्ष्मी वसिह नृ मित्रवांधवपनि जिह्वै माह बंधनमृत्युप ॥ राम ॥

निजिभ्रमोदतसर्थमिहोकरावोलनु ॥१२॥ प्रीयवाक्यप्रदानेन सर्वे तुष्टं
जितंतव ॥ तस्मात्ते वज्रातव्यं किं वाकोपिरिदूता ॥१३॥ मीठोकरावाल्या
पदि सर्वे लोकपनि संतोषहुं द तसर्थवचनलेहिरिदूतगर्नु ॥१३॥ अग्नीदे
गरदश्चैव शस्त्रपानिधनापहा ॥ क्षेत्रेदारपहारिचषदेते आततायिन ॥१४॥
॥ आगेरापिदित्याविषयानरिन्यामं स्वलेहां न्याधनहन्यां पेतचोन्यां स्वा
स्त्रिचौरित्याउन्याहतीथोकगन्या आपस्तनमनु ॥१४॥ आततायिनम
यांतमपि वेदांतपारां ॥ जिघांसेतं जिघां सियां नतेन ब्रह्महात्रवेत ॥१५॥
एतिथोकमाएकथोकगन्यां तास्यपनिब्रह्मरावेदांतपारायाकात्रया

॥ ३८ ॥ पनित्योवास्मरा माज्या पनित्वस्व ह त्वात्वा गेद न ॥ १५ ॥ राष्ट्रपालयते नीत्यं सापं
धर्मपरायण ॥ निर्जित्य परसेन्या निपति धर्म न पालयेत् ॥ १६ ॥ राजाक्षेप
निसर्धै सत्य धर्म राज्य प्रतिपालगनु परसेन्य नाशगनु राजाक्षे धर्म जा
॥ एम ॥ निकन प्रतिपालगनु ॥ १६ ॥ पुष्यं पुष्यं विचिन्वति मूलं दंडं नकारय त
॥ मालाकार इवांगानि यथा नाति सारतं ॥ १७ ॥ राजाक्षे मालि निले ग ज्य म्रै फ ॥ २१ ॥
तमात्रेति प्रुवातेनु उरे तनु प्रजाको विरामे हरित्ये अनुसारते दंडतिनु
अन्याय त संपति जिउ नतिनु ॥ १७ ॥ अरि मित्र मुद्रा सिनं मध्यस्थं स्थ
विरगुरुं ॥ योनवुठेति संरात्या सच सर्व वन स्थिति ॥ १८ ॥ सत्रु मित्र मुद्रा ॥ राम ॥

तिनं मध्यस्थं स्याद्विरंगुहं ॥ योनवुद्यतिमदात्मा सच सर्व व्रनश्रुति ॥ १८ ॥
॥ सवुमित्र उद्यतिमध्यमश्रेष्ठगुरु एति थोकन जान्याकन सर्वे ठाउमान
सहृद ॥ १८ ॥ अनायव्ययतारं अनाथकलहप्रिय आनुरे सर्व भक्षिच
सच सर्व व्रनश्रुति ॥ १८ ॥ आहामतनभैकन स्वर्गगन्या राजानन्नायाक
देसमाकलहगन्या रोगीमासर्वे थाकषान्या एति थोकगन्या चारैनास
हृद ॥ १८ ॥ ककालकानि मित्राणि कोरेस कावेयागमौ ॥ कस्याहं काच
मेसकीरिति चिंतामुहुर्मुहुः ॥ २० ॥ कालभन्याकोक्याहो तलैमित्रदेस
यआगमभन्याकोक्याहोमकोहोहोमैरेक्यासमर्थदन्नि एति वारं वा

॥ बुध ॥ रचिंतना गर्नु काल को वस्य हो भनि जानु ॥ २० ॥ सिंहादे कं व को दे कं सिं थं च त्वारी
कुं कुरान् ॥ वायसात्यं च सिं थं च ष तु पुन स्त्री रिण दर्स भात् ॥ २१ ॥ सिंह दे उ एक गु
ण सि क नु व कु ला दे उ एक गुण भा या कु पु रा दे उ चार गुण कौ वा दे उ पा च गुण
॥ २२ ॥ कु कुर दे उ द गुण ग दा हा दे उ ति न गुण सि क नु ॥ २३ ॥ प्र भू त कार्य म ल्यं वा यो
न र क तु मि द ती ॥ सर्वा रं भेषु त त्कार्य सिं हा दे क वि शि ष्य ते ॥ २४ ॥ के हि का ॥ २५ ॥
मं आ रं भ ग न्या प नि उ का म सि द्ध न भ यि न दो द नु त्यो एक गुण सिं ह को सि क
नु ॥ २६ ॥ इ दि यानि तु स य स्य व क वा पं दि तो न र कार्य कालो प प न्ना नि स र्व
का र्या रिण सा व ये त् ॥ २७ ॥ व कु ला जै रा नि भौ म नु व्य ले आ पु ले गर्नु न स क्य ॥ ए व ॥

कोकाममापंचरुद्रियनिग्रहगारिकनसर्वे कामसाधनागर्नु एति एक
रावकुलाकोलिनु ॥ २३ ॥ प्रागुत्थानेचयुदुचसंविज्ञागंचवंपुषु ॥ श्रियमा
कम्प नुजितसिंथेचत्वारिकुकरात् ॥ २४ ॥ विहाने उठनु सत्रु सितयुदु
गनु इष्ट मित्रवरोवरोवरगर्नु स्त्रीसहितगारिकनयानु एति चार गुणाकुषु
एको सीनु ॥ २४ ॥ गूरु मैथुनधृष्टत्वं कालेवां धव संग्रह ॥ अप्रमादि सुधू
र्तेचपचक्रिथ्यचवायसात् ॥ २५ ॥ स्त्री जोगमागुप्तगर्नु वेलासा संग्रहगर्नु
शानु साचुसंगहिदनु अहंकारनगर्नु धूर्तदुनु एति पांचगुणका गद्दे
उलिनु ॥ २५ ॥ वक्र सिचाव्य संतुष्ट सुति ॥ सीध्वेवेतच ॥ स्वामि नक्त

[illegible]

रापुसो भवति विग्रह ॥ २८ ॥ मुखे न भया को जानि अनुमनुष्यते संताप भया को सवै आ
फना चितमाना सगदं परस्पर उपकार गारिकन साधु जन को कल ह ह ह ॥ २९ ॥ स्कोदर
पृथग्गीवाये चरति महार्णवे असाधिता विन स्यती ने जे दारु वव विरगे ॥ ३० ॥ पट भ
न्याये के हसिर अन्या भिन ह ह ह समुद्र मा जामा दापिरे अयोरना स भयो तले आ फु मा
निस कन विरोध न गर्नु ॥ ३१ ॥ व्यसने सति कर्वित येन केनापि संगति ॥ मक्षवान रणा पु
दै पुरा दास रथि र्यथा ॥ ३२ ॥ विप्रती काल साक सै दे उ भजना गारिक न पनि दुःख को ना
सगनु के सो अन्या श्री राम ले भातु वा दर को सहाय गारिकन आ फु विपती तारणा ज
न्या था तले तरुते गर्नु ॥ ३३ ॥ दुस्तर सागर रति री समुद्र वा नर वतं ॥ अनुत पूर्व रसेन से

॥ १२४ ॥ तुवदुसागरे ॥ ३२ ॥ सामत भयापिदिसमुद्रपनिनतनुहुंवानरहरते श्रीरामका
भाजातेसमुद्रमापनिसेतुबंधसायखाध्यायी ॥ ३२ ॥ युयंततवयंपंचविरोधं
चपरस्परं ॥ परैराक्रस्यमानेतुवयंपनोत्तरैसरं ॥ ३३ ॥ युधिष्ठिरराजातेदुर्जीचन
ताई नंदनूतिमिहहसयजनारहामिहहपाचभाई विरोधभयाकाठाउसाएकै
हुंनुहुंतिमिहहसितपरस्परविरोधभयापनिमित्तनुपद ॥ ३३ ॥ हित्वाधित्वाच ॥ २४ ॥
ममारिणकृत्वाचैनसांतकंजातयः समतांयातियः परपरयवच ॥ ३४ ॥ आफुहि
तमित्रदायापनिधर्मनेदगायापनिसत्रुभावहुंदैनः आफुमित्र आफुहुंदपतन
न्यांकोसर्वपतहुंद ॥ चिंताजरुमनुस्यानां अरश्चानामथुनंज्वरं ॥ असौभाग्यं ॥ राम

ज्वरस्त्रीणां वस्त्राणां भातपो ज्वरः ॥ ३५ ॥ मनुष्यको ज्वरचिंता अश्वको ज्वरमेथुनस्त्रिको
को ज्वर असौ भाग्यवस्त्रको ज्वर घामः ॥ ३५ ॥ अघ्वाजरा मनुष्याणां मनश्वां वाजिनां ज
रा ॥ अमेथुन जरा स्त्रीणां अश्वानां मेथुनं जरा ॥ ३६ ॥ धौरहिदन्या मनुचो देवुठा हुं द न हि
दन्या घोदा वुठा हुं द मेथुन न जया पदि स्वास्त्रि वुलि हुं द मेथुन गज्या घोरा वुठा हुं द ॥ ३६ ॥
कष्टा प्रतिपराधिनां कष्टा वासानि राश्रया ॥ भुतपुर्वार्थसंयुक्त सर्वे कष्टा दीरदता ॥ ३७ ॥
मनुष्यको कष्ट अर्काको नरसागरिवत् अरु कष्ट आश्रमन हुन्या अरु दे उवासगरिवत्
अरु धनाध्य भौक नद रिद्र हुनु सर्वे कष्टा दीरदका हुं ॥ ३७ ॥ अर्थितो व्याधितो मुखं प्रवाप्ति
परसेवकः ॥ जीवितोऽपि मृतपंचपंचैते दुःखभागीनः ॥ ३८ ॥ सद्यधनतुल्या उनाको सुत्ता

॥ ११ ॥

॥ २५ ॥

गर्भ्यासदाकेरिमिमनुष्यमुखसदाकोपदेशि अर्काकोचाकर एतिपाचजिंदाप
निमन्याकाहुन् ॥ ३८ ॥ योयत्रनित्यमायाति भुक्तं चापि दिनेदिने ॥ सतत्रतद्युता
पांतिपदिसकसमोनर ॥ ३९ ॥ अर्काकोघरमासदाजानुसदाखानुसदावस्तुग
यापदितेस्थाउमा इद्रतुल्यनयापरिण सानीसहस्रकाहुदन् ॥ ४० ॥ परात्रणवस्त्र
चपरपानं परस्त्रिय ॥ परस्यचगृहेवासशक्रस्यापिभ्रियंहरत् ॥ ४० ॥ अर्काकोअंन
षान्या अर्काकोवस्त्रताउन्या अर्काकोस्थस्तिगमनगर्भ्या अर्काकोघरमावासग
र्भ्याइन्द्रतुल्यनयापनिलक्ष्मीनासिंह ॥ ४० ॥ असौचोनिर्धनोविद्वान् असौप्रवा
न्नर ॥ असौचोविधवानारिपुत्रपैत्रप्रतिष्ठिता ॥ ४१ ॥ शानि नयापनिकंगालम्

॥ २५ ॥

॥ राम ॥

चिद्धारमहन्त्यामनुष्यअशुचिपुरुषनजयाकिस्वास्तिअशुचिहुन् ४१० वी
नवासर्वपुज्यंतेनसारिरानदेहिन चारदालोपिनगरोष्टयस्थास्तिविपुलं च
जम् ४२ धनमाहुपरं धर्म धने सर्वप्रतिष्ठित जीवति धनिनालोके मृतोयेत्व
धनानरा ४३ अतिधनमयापनिखस्दकसोभन्या अत्मा पर्वतकनवज्जले हा
न्दतस्तैरेधनमयापनिपद्मिनासिद्ध ४४ धनमाहुपरं धर्म धने सर्वप्रतिस्थि
त जीवति धनिनालोके मृतोयेत्व धनानरा ४५ धनंते धर्म हुं ह धनले सर्वे
प्रतिष्ठा हुं ह धनहुन्ममानिसकोजिव हुं ह तीर्दुनीमानि स्कोजीव दैनमन्यावरे
वरं ननु ४५ अति सपदमापेनोन्नते व्यं पातना दुयं यस्य च सिरखरुद सन्यं व

॥ उचिध ॥

जरापातितः ४६० ठेरेसंपति भयापदिबस्ना भनिदईक सेनन्या अति उचपर्वत
जावज्जपात हुंदत से होता ४६१ को नमो भक्ष को नित्यं किं सुखनि चो गिराणां
यस्य भार्या लतुष्टा क चत स्यात्स वंगुहे ४६२ सैवैषैक षान्या तेन पाया को कपाद् सरा
रैगि को क्या सुखद् जल्को स्त्री असंतोषि उसको सुख का हा हुंद उस्का घर मापनी
कैले सुख हुंदेन ४६३ सैनि क्षक र्ष को नित्यं सुखनि त्यमरे गिराणां नार्था
भर्तुव सायस्य तस्य नित्यो त्म वंगुहे ४६४ सुनिक्ष भयापदिषे ताता को सुख हुंद
रैगि न नया सदा सुख हुंद आफ्रा स्वाखि आफ्रा वस चया को दिन वदा सुख
हुंद ४६५ सर्व परव संदः ख सर्व मात्म वसं सुखं एतदिद्यात्समासे नत क्षरां

॥ २१ ॥

॥ २१ ॥

॥ राम ॥

[illegible]

॥ १३ ॥

बोता उद्धतस्तैः ॥ ५२ ॥ असंस्पर्कदोषेन अचमायातिसाध्वं मार्गस्तिमिरदोषेण स मा
पिविसमायत ॥ ५३ ॥ असाधुका संगतदोषलसाधुपनि असाधुहंहुं अचकार न या
कोरत्रिमासो ज्ञेयया कोवारापनि वांगो हंहुं ॥ ५३ ॥ उत्तमै सह संग न को न यातिसमुन्न
तिं ॥ मृदा नृणां निधार्यते ग्रथितैकुसुमे ॥ सह ॥ ५४ ॥ निका संग न वा पीद्वि न नि को ह
षपनि नि को नि को हंहुं फुलसित उम्पा को तृणपनि सिरमाता इहं ॥ ५४ ॥ किं करि
ष्यति संपर्क ॥ स्वभावो दुरति क्रम ॥ पस्यामुफूतम ॥ अस्य कषायो ना मृतता गत ॥
पप ॥ अलासित संगत न यापनि स्वभावदुर्देन आम्बुका फलत्रिंशको कोयो अ
मिता गुलियो हंहुं देन ॥ ५५ ॥ सर्कण सत भारण मध्येति वुप्रतिष्टीतं ॥ मधु क्षीर

॥ २० ॥

॥ राम ॥

समावृष्टिं निर्वकिं मधुरायते ५६ सखराय आरिहातिकननिमकाफलैरप्यापनिमह
दुदसद्विदिक्ते रस्यापनिनिमगुलितियाहुंदेन ५६ पुस्तकेषु चयापियापराईकाहा त
दियाको धनकामपरि आयाकावेला मात्यो वियापनि धनपनि कामपदैन् ५७ दूरस्थ
निचमि त्रानि निस्नेहाश्चैव वांधवा ॥ किंपर्यो जनकतव्य आर्थि ते निष्पत्तापेचे ५८ ताढा
भयाको मित्रप्रतिन भयाको भाईक्या कामपाइला माग्याको नया जस्ने हो ५८ अरु
द्रमपुण्यानी दूरस्थाश्चैव वांधवा ॥ कांता चालेख्य भुताचकाते नोपि पतिष्ठति ५९ व
नको फुलटाढाको वंधुवर्गा भितामलिष्याकि स्त्रीरुतिका ममा आउंदेन ५९ प्रवच
नहि नश्च कर्महेहि नश्च यो नर ॥ निरर्थाचेतनायस्य भस्मन्याहुतयार्थधा ६० बु

वुधि. द्विलेहिन भयाकोकमतेहिन भयाको मनुष्यजि अनुव्यर्थ ६. खरानिमा आहुतिदि
पाजस्तो हो. ६०. दागपुर मषिभ्रां द्व प्रभाते मेघद्वर. दपत्योकलह क्षणमा इरतिष्ठ
ति. ६१. वाकौका युद्ध मषिको भ्राह्म प्रात काल को मेघखी पुरुष को कलह क्षणमात्र
रुट्टेन. ६१. निष्फल कृपणो सेवानिष्फल इति चातुरे. दोषसंयुक्त शीलस्य अतिवि
प्रस्य निष्थला. ६२. कृपनिर्मानि स्तेडको सेवादले हतपतले रतिगन्या को ऐगि मनुष्य
ले संभोगगन्या को दोषले युक्त भयाको श्रात्मणाले पद्मा को वेद निष्फल भंडन. ६२
वरये कुलजा प्राजो पिरुपा मपि कन्यका. मुरूपी शि ननिचसेवेवात्म सहस्रकुल.
६३. वेदाले वद कुलकि कन्या नरा मी भयापनि विवाहगुनु. निचको रा मी दित

२८.

राम

पनिविवाहनगर्जुवरोवरकुलमागर्जु॥३२॥विषादयमृतंग्राह्यममेध्यामपिकोचनं-नि
चादप्युतमाविद्यास्त्रीरत्नदुष्कुलादपि-६४-विखवातपनिअमृतजिकिलिनुअपधवि
वेदेषिपनिसुवर्गलिनुनिचमनुष्येदेषिपनिउत्तमाविद्यालीनु-स्त्रीरत्नघरियाकुल
देषिपनिलिनु-६४-कस्येदेषकुलनाशिवाधिनाकोनापिद्यते-कोननव्यसनंप्राप्तं
कस्यश्चीश्चनिरंतरं-६५-कस्काकुलदेष्टेनकश्चनूरोगमयाकोदेनव्यसनकश्चेपा
याकोदेनलक्ष्मीसदाकस्कास्थिरहृद-६५-दोषोपस्त्रीगुरोप्यस्तिनिगुरोष्वपिजंतुषु
सुकुमारस्यपद्मस्यनालोभवतिकर्कसा-६६-दोषगुरानभयाकोप्राणिदेनबहु
तकोमलकमलदतपनिदातमाकाठालेखश्रीद-६६-अमृतंसिसिरेवन्हिअमृ

वृत्ति

१८०

तद्विरभोजनंम् भार्यागुणवर्तिचैव ह्यमृतंवातरिषतं... ६७... सिसिरमृतमाभूति
द्विरभोजनपानि अमृत गुणवर्तिस्त्रिसिरभोजनअमृत तुल्यहो... ६८... दुर्लभा
प्राकृतिवानिदुर्लभश्चक्षामिपुत्र... दुर्लभाचसुहृन्नारिदुर्लभंयचनंप्रिय... ६९
संस्कृतवोति. अपराचमाफगन्याप्रभुप्रियवोतन्यास्त्रीप्रियारेतागन्यावचन
एतिदुर्लभंहुं... ७०... नदिनाजान्हविन्हविश्रृणारिनांचपतिव्रता. मनु
ष्याणांनृपं प्राहुदसोनांयत्रनिर्वृति. ७१... नदिविषयमार्गगाश्रितिमाप
रिव्रताश्रेष्ठमानिम्पाराजाभूषेदेसमामिन्दोश्रेष्ठेष्टमनु... ७२... पुत्रपौत्र
समाकिर्णदसिदाससमाकुतं. भार्याविरहितं पुंसायथारण्यं तथा गृहं.

१९

राम

७०. दोरानाति सवै प्रकाशे दासदासिले युक्त भयाकोदरतपानिस्त्रीरहितपनि उर
रापवन जलोहं द. ७०. सर्वेषां मेवरत्नानां स्त्रीरत्नं हि अनुत्तमं. तस्मात्तदर्थं निरतास्त
यात्पकाधन किं. ७१. सर्वे रत्नभंडास्त्रीरत्न उत मतसर्थं स्त्रीनि भयाकाधनलेखप्रयोज
नद. ७१. कुस्त्रीहंति कुटुंबाणि कुपुत्रो हन्यते कुलं. कुमंत्रो हन्यते राजाष्टं चोरेण ह
न्यते. ७२. घट्टियास्त्री भयाकुटुंबनागर्दभोरले राज्या कोनासगर्द. कुपुत्रो हन्यते कुल
सगर्द कुमंत्रो हन्यते राजाकोनासगर्द. ७२. स्त्रीरणादेष सहश्राणि गुणा स्त्रिणि नहि पते
सहाचारसुजात्याति मरणे पतिना सह. ७३. स्त्रीकोदेषह जायते गुणति नद कथा कथा
भन्याकुटुंबको निदानगर्नु दोरातुल्या उनुपुत्रस्य मया पदिसति जानु. ७३. वकय

७०

राम

१०

किं न पश्यति किं न भवति वा यसाः प्रमदा किं तु कुर्वन्ति किं न जल्पति मद्यपाः ७
४. पंरिदत्त हरले न देषाको क्वाद् काक ले क्वाषादेन सी ले क्वा गर्दन सतत्राल लेगा
लि न दिपाको क्वाद् ७४. पुत्रपुया जन जाया पुत्रपिदष योजनं. हीत प्रयो ज
न मित्रं सर्व मात्म प्रयो जनं. ७५. द्येरा पाउनु कारणा स्वास्ति तुल्या उनु. पि ददन क
अर्थ ले द्येरा तुल्या उनु. हित का अर्थ ले मित्र तुल्या उनु. सर्व थोक आम्हा निमित्त
ले तुल्या उनु पद्. ७५. समुद्र वरणा भुमि आकारा वरणा गृहा. नरेन्द्रा वरणा दे
साश्चरि वरणा स्त्रिय. ७६. समुद्र ले एथीवे स्थित द्द पर्याल ले धर वेष्टित द्दरा
जाले दे स वेष्टित द्द चरि व ले स्त्री स्त्रि वेष्टित द्द. ७६. नगरा नि न वासा नि न प्रा

२०

राम

जीर्णमर्नप्रसस्यन्ति नार्याचगातयौवना- रणप्रत्यागतं शूरं सस्यंच गृह
मागत- ८८- जिनागरिषायाको आगनिको स्वास्ति नया यौवराग- य
को नि को- शूरे नया संग्राममाहं जु नया को नि को चानगरु न- य
घरमापुयाको नि को हुं- ८९- एदिमलक्षणाहि नेव कुतहि नेस
स्वीतकुपा उच्छिउ स्वास्ति पर्वतमा वृषु ग- या को जसो हुं- ९०- यस्य
नार्या विरुपा श्री कस्मलिकलह प्रिय उत्तरेतरवादि च सा जरा जरा- ९१
कस्की स्वास्ती नरा म्री कलह प्रिय उत्तरेतरवादि यस्ति स्वास्ति नया पदि
३॥ बुढान नयापनि चो हो हुं- ९२- यस्य नार्या सुहृपा च भर्तार मनुगामि

१८

निःनित्यं मधुर नापि यसाश्चिदानभिषा ८४ जस्की स्त्री सुंदरि स्वामिला इ
मांन्यादि न २ मधुर प्रियवचनं बालन्याश्चिख स्त्री न यापनित्व स्त्री न याकि
जस्ते हं ८४ यस्य भाषा गृहे नित्यं भुवि परिगर्जति - तस्य सिरंती
गात्राणि पद्मानि बहि मा गमे ८५ जस्का धरमा स्त्री लपुरु खला ई कु
कुरते हपकाया जस्ते गार्दे तस्य पुरुष को सरिरसि सिखा तका क मल ज
सं हं ८५ यस्य भाषा गृहे चैव भाते वहीत कारिण - वदते तस्य
गात्राणि भुक्त पक्षे यथा तसि ८६ जस्का धरमा स्त्री लपुरु खला ई कु
कुरते हपकाया जस्ते गार्दे तस्य पुरुष को सरिर भुक्त पक्षे का चंद्रमा ज

३१

३१

राम

सैव उह ८६ कि जाते बहुभिः पुत्रैः सो क संतापकारकैः ॥ वरमेक कुला
लं विषयत्रविश्वमतेकुलं ८७ ॥ धैर्ये होरा भयापनि कुलको कथा प्रयो जन
सो क संताप मात्रे हं पुत्र होरा एकै मात्र भयापनि कुलको उद्धार हं
८८ ॥ एका भार्या त्रय पुत्र द्वह रिद स धनव ॥ कन्या काला वसाने प
नते यास्यंति विस्मियां ८९ ॥ एक जना स्वास्ति न होरा दुई ह लिद स
गा ई पदि ज भया कि एक होरि एति हुन्या मां दे को विगार हुं देन ९० ॥
एष व्यावहृत् पुत्रा यामे को यदि प्रजेत यजेत व्याश्वमेधेन निलं
वा प्रषमुत्तरत ९१ ॥ धैर्ये होरा भया एक होरा वदा चित्त गया जा

३१६

३२

तात्पत्रे भुवमेघजग्यगन्धाको फलपाउं दनितवर्ण भयाको गार्इया
 नग-याको पुरा पपाउं द... ८६... एके न भुक्त तदेरा दल्यमानेन बन्ति
 ना दस्यते तद न सर्वे कुपुत्रे राकु जंयथा... ८७... वनमा सुक्वा कोका
 ठ आगाते राहग दसर्वे पविं राहग-यो तले कुपुत्रे कुलको राहग
 यो तले कुपुत्रे कुलके राहगदि... ८८... एके ना पी सुप्रदेन पुष्पिनेन
 सुगंधिना वासिते नद न सर्वे सुपुत्रे राकु लंयथा... ८९... वरा मा एक रु
 यमा सुगंध फल जयोर वरा सर्वे को सुवा सना न ये द तले सुपुत्रे कु
 लको उद्धारगदि... ९०... यस्य पुत्रा वसा भृत्या जायते द दानुगामिनि... ९१

३२

साम

नेवषपिसंतुष्टः स्वर्गतस्य महि तले ॥ ६२ ॥ जस्को भयापनिद्वयं सवक हस
आफ्रवसु भयापदिः भन्या कोकु एखा हिते मान्यापदि धनते पुरा
यापदितेस्का धरस्वर्गतुते विश्राम हं ॥ ६२ ॥ यपु गस्तपितुवशासपितापस्तु
पाषक तस्मिन् यत्र विश्रामे सा भार्या यत्र निवर्तते ॥ ६३ ॥ वावुको वस्य हुन्य
ह्येनं नु ज भन्या विखा सपात नागदिते शार्दमी ॥ ६३ ॥ ननु जस्का स्त्रिपुरुषके
वस्य हुं द उखा इस्त्री ननु ॥ ६३ ॥ जस्य जीवति जीवति विप्रामित्रा श्रवांच वा
सफलं जीवितं तस्य ह्यत्मा र्थ को न जीवति ॥ ६४ ॥ जस्को प्राप्ता मि
व भयो आफ्र जिउ ज्या लो जियापदी त्यस्को जन्म सफल आफ्र ले मा व

प्रितुनुजिविकागनुनेस्कोजन्मकोसाफलददेन...६४...सोजिव
 तीगुराण्यस्यधर्मसजिवीत...गुणधर्माविहितस्यानिष्फलंतस्यजीवि
 तं...६५...नस्कोगुणपनिउस्कोनिवद्धमनुजस्कोगुणपनिहेनधर्मपनिहे
 नउस्कोजन्मनिष्कालहुंद...६५...वाचासरस्वतियस्यभार्यारूपवनिमिति
 ...लक्ष्मीत्यागवलीयस्यसफलंतस्यजीवितं...६६...जन्मावज्जनसागरस्व
 तिहस्वास्तिरूपवतिऊंदेलक्ष्मीत्यागगनुसमर्थत्यस्कोजन्मजयाको
 सुफलमनु...६६...धर्माअर्थकार्यमोक्षचारथोकमास्तिथोकजन्म
 मनुष्यदंडदेनउस्कोजागतिदेनउस्कोजन्मनिफलद...६७...ध